टिप्पणी

33

लेखांकन अनुपात - II

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि लेखांकन अनुपातों को चार प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है जो हैं : तरलता अनुपात, क्रियाशील अनुपात, शोधन क्षमता अनुपात एवं लाभप्रदता अनुपात। आप तरलता अनुपात एवं क्रियाशील अनुपातों का अर्थ, उनकी गणना करना एवं उनके महत्व के संबंध में पहले ही जान चुके हैं। इस पाठ में आप विभिन्न शोधन क्षमता अनुपात एवं लाभ प्रदता अनुपातों एवं उनके महत्व के संबंध में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- विभिन्न प्रकार के अनुपातों को समझ सकेंगे जैसे कि शोधन क्षमता, लाभ प्रदत्ता;
- दी गई सूचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के अनुपातों की गणना कर सकेंगे;
- लेखांकन अनुपातों की सीमाओं का वर्णन कर सकेंगे।

33.1 शोधन क्षमता अनुपात (Solvency Ratios)

शब्द 'शोधन क्षमता' व्यावसायिक इकाई की अपने दीर्घ अवधि दायित्वों का भुगतान करने की क्षमता के लिये प्रयुक्त होता है। फर्म का दीर्घ अवधि दायित्व ऋण पत्र धारक, मध्य अवधि एवं दीर्घ अवधि ऋण उपलब्ध कराने वाले वित्तीय संस्थान तथा उधार माल बेचने वाले लेनदारों के प्रति होता है। यह अनुपात फर्म की स्थाई ब्याज तथा इसकी लागत का भुगतान करने तथा उसकी दीर्घ अवधिक ऋणों के समय सारिणी के अनुसार लौटाने की क्षमता को दर्शाते हैं।

नीचे दिये गये अनुपात फर्म की शोधन क्षमता के निर्धारण के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं :

टिप्पणी

- ऋण समता अनुपात
- स्वामित्व अनुपात

ऋण समता अनुपात (Debt Equity Ratio)

इसे बाह्य समता का आन्तरिक समता से अनुपात भी कहते हैं। इसकी गणना बाह्य लोगों एवं स्वामियों के फर्म की परिसम्पत्तियों पर तुलनात्मक दावे के निर्धारण के लिए की जाती है। यह अनुपात बाह्य कोष एवं अंशधारकों के कोष के बीच संबंध को स्थापित करता है। अतः

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{बाह्य कोष}}{\text{अंशधारियों का कोष}}$$

इस अनुपात के दो मूल तत्त्व हैं बाह्य कोष एवं अंशधारक कोष। बाह्य कोषों में सम्मिलित हैं सभी बाह्य/ऋण दायित्व अर्थात ऋणपत्र, वित्तीय संस्थानों से दीर्घ अवधि ऋण आदि। अंशधारक कोष का अर्थ है पूर्वाधिकार अंश पूँजी, समता अंश पूँजी, संचय एवं आधिक्य। अवास्तविक सम्पत्तियाँ जैसे कि प्रारम्भिक व्यय को इसमें से घटा दिया जाता है। यह अनुपात अंशधारियों के कोष एवं दीर्घ अवधि ऋण कोषों के बीच अनुपात को व्यक्त करता है। भारत में यह अनुपात यदि 2 : 1 है तो स्वीकार्य है। यदि ऋण समता अनुपात इससे अधिक है तो दीर्घ अवधि में यह जोखिम से पूर्ण आर्थिक स्थिति को दिखाता है।

महत्त्व

ऋण समता अनुपात का उद्देश्य संस्था में लगी स्वामियों की पूँजी के तथ्य को सामने लाना है। यह अनुपात फर्म की दीर्घ अवधि की वित्तीय स्थिति की सुदृढ़ता का आकलन करने में बहुत सहायक है। यह इस ओर भी इंगित करता है कि फर्म अपने अस्तित्व के लिए किस सीमा तक बाहर के लोगों पर निर्भर करती है। यदि ऋण समता अनुपात नीचा है तो इसका अर्थ है कि ऋण की तुलना में समता का अधिक उपयोग किया जा रहा है।

उदाहरण 1

निम्नलिखित से ऋण समता अनुपात ज्ञात कीजिए

विवरण	*राशि (₹)*
समता अंश पूँजी	1,00,000
सामान्य संचय	45,000
संग्रहित लाभ	30,000
ऋणपत्र	75,000
विविध व्यापारिक लेनदार	40,000
अदत्त व्यय	10,000

टिप्पणी

हल

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{ऋण (समग्र दीर्घ अवधि ऋण)}}{\text{समता (अंश धारक कोष)}}$$

$$= \frac{₹\ 75,000}{₹\ 1,75,000} = 3 : 7$$

कार्यकारी टिप्पणियां :

अंशधारियों का कोष = समता अंश पूँजी + संचय + संग्रहित लाभ

(i) ₹ 1,00,000 + ₹ 45,000 + ₹ 30,000 = ₹ 1,75,000

(ii) दीर्घ अवधि ऋण = ऋणपत्र = ₹ 75,000

उदाहरण 2

निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से ऋण समता अनुपात ज्ञात कीजिए।

कुल सम्पत्तियां ₹ 1,20,000, कुल ऋण ₹ 1,00,000, चालू देयताएं ₹ 60,000।

हल

ऋण समता अनुपात की गणना

दीर्घ अवधि ऋण = कुल ऋण – चालू देयताएँ

= ₹ 1,00,000 – ₹ 60,000

= ₹ 40,000

अंशधारियों का कोष = कुल सम्पतियाँ – कुल ऋण

= ₹ 1,20,000 – ₹ 1,00,000

= ₹ 20,000

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$$

$$= \frac{₹\ 40,000}{₹\ 20,000} = 2$$

स्वामित्व अनुपात (Proprietory Ratio)

इसे समता अनुपात भी कहते हैं। यह फर्म के अंशधारियों के कोष एवं कुल परिसम्पत्तियों के बीच संबंध स्थापित करता है। अंशधारियों का कोष समता अंश पूँजी पूर्वाधिकार

टिप्पणी

अंश पूँजी, संचय एवं आधिक्य का कुल योग होता है। इस राशि में से एकट्ठा होती गई हानियों को घटा देना चाहिए। दूसरी ओर कुल सम्पत्तियों का अर्थ है व्यवसाय के कुल संसाधन। अनुपात की इस प्रकार से गणना की जा सकती है :

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{अंशधारियों का कोष}}{\text{कुल परिसंपत्तियां}}$$

महत्व

स्वामित्व अनुपात उद्यम की सामान्य वित्तीय स्थिति पर प्रकाश डालता है। यह अनुपात विशेष रूप से उन लेनदारों के लिये महत्वपूर्ण है जो फर्म की कुल परिसम्पत्तियों में अंशधारियों के अनुपातिक भाग का निर्धारण कर सकते हैं। उच्च अनुपात यह दर्शाता है कि सभी प्रकार के लेनदार सुरक्षित है। जितना उच्च अनुपात होगा सभी संबंधित पक्षों के लिए उतना अधिक अच्छा रहेगा।

50% से नीचे का अनुपात लेनदारों के लिए खतरा सिद्ध हो सकता है क्योंकि भारी हानि होने की स्थिति में कम्पनी के समापन पर उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

उदाहरण 3

निम्नलिखित से स्वामित्व अनुपात की गणना कीजिए :

	₹
समता अंश पूँजी	1,00,000
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	50,000
संचय एवं आधिक्य	25,000
ऋण पत्र	60,000
लेनदार	15,000
कुल	2,50,000
स्थाई सम्पत्तियां	1,25,000
चालू सम्पत्तियां	50,000
निवेश	75,000
कुल	2,50,000

हल :

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{अंशधारियों का कोष}}{\text{कुल परिसंपत्तियां}}$$

टिप्पणी

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{समता अंश पूँजी+पूर्वाधिकार अंश पूँजी+संचय एवं आधिक्य}}{\text{कुल परिसंपत्तियां}}$$

$$= \frac{₹\ 1,75,000}{₹\ 2,50,000} = 0.7 \text{ या } 70\%$$

ब्याज संरक्षण अनुपात

यह अनुपात ब्याज एवं कर पूर्व शुद्ध लाभ एवं दीर्घ अवधि ऋणों पर ब्याज के बीच सम्बन्धों की स्थापना करता है। इसकी गणना निम्न प्रकार से की जाती है :

$$\text{ब्याज संरक्षण अनुपात} = \frac{\text{ब्याज एवं कर पूर्व शुद्ध लाभ}}{\text{दीर्घ अवधि ऋणों पर ब्याज}}$$

उदाहरण 4

X लि. के पास ₹ 20,00,000 के 10% दीर्घ अवधि ऋण हैं। ब्याज एवं कर से पूर्व इसका शुद्ध लाभ ₹ 9,00,000 था। ब्याज संरक्षण अनुपात की गणना कीजिए।

हल :

$$\text{ब्याज संरक्षण अनुपात} = \frac{\text{ब्याज एवं कर पूर्व शुद्ध लाभ}}{\text{दीर्घ अवधि ऋणों पर ब्याज}}$$

$$\text{ब्याज एवं कर पूर्व शुद्ध लाभ} = ₹\ 9,00,000$$

$$\text{दीर्घ अवधि ऋणों पर ब्याज} = \frac{10}{100} \times 20,00,000 \times \frac{10}{100}$$

$$\therefore \quad \text{ब्याज संरक्षण अनुपात} = \frac{₹\ 9,00,000}{₹\ 2,00,000} = 4.5 \text{ बार}$$

महत्व

यह अनुपात दीर्घ अवधि ऋण देने वाली एजेन्सियों के लिए उपयोगी है जैसे कि ऋण पत्र धारक एवं दीर्घ अवधि कोष के ऋण दाता। यह अनुपात दर्शाता है कि दीर्घ अवधि ऋणों पर ब्याज को कितनी बार लाभ कवर कर लेता है। ऋण दाताओं के लिए उच्च अनुपात को अधिक उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि यह अधिक सुरक्षा सीमा प्रदान करता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 33.1

रिक्त स्थानों की उचित शब्द भर कर पूर्ति कीजिए :

i. ऋण समता अनुपात = ...

ii. ..... अनुपात फर्म के दीर्घकालीन दायित्व का मापन है

iii. ..... $= \frac{\text{अंशधारियों का कोष}}{\text{कुल परिसंपत्तियां}}$

iv. ऋण समता अनुपात $= \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}} = \frac{₹\ 2,00,000}{₹\ 3,00,000} =$ _____

33.2 लाभप्रदत्ता अनुपात (Profitablity Ratios)

किसी भी व्यावसायिक उद्यम का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है जो कि उसके बने रहने एवं विकास के लिये आवश्यक होता है। इसका अर्जन व्यवसाय में निवेशित पूँजी की सहायता से किया जाता है। यह जानना आवश्यक होता है कि व्यवसाय में लगी पूँजी से कितना लाभ कमाया गया है यह अनुपात के माध्यम से संभव है। इस अनुपात के द्वारा व्यवसायिक इकाई के चालू परिचालन निष्पादन एवं क्षमता की जांच की जाती है। यह अनुपात प्रबन्ध को अवनति की की दशा में उपचार के उपाय अपनाने में सहायता करते हैं। मुख्य लाभप्रदत्ता अनुपात है :

(i) सकल लाभ अनुपात (Gross profit ratio)

(ii) शुद्ध लाभ अनुपात (Net profit ratio)

(iii) परिचालन लाभ अनुपात (Operating profit ratio)

(iv) विनियोजन पर प्रत्याय अनुपात (Return on investment ratio)

(i) सकल लाभ अनुपात

यह सकल लाभ का शुद्ध बिक्री से संबंध व्यक्त करता है। इसको प्रतिशत के रूप में दर्शाया जाता है। इसकी गणना इस प्रकार होती है :

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

जबकि शुद्ध बिक्री = कुल बिक्री – (विक्रय वापसी + उत्पादन शुल्क)

सकल लाभ = शुद्ध बिक्री – विक्रय माल की लागत

टिप्पणी

महत्व

सकल लाभ अनुपात लाभ की सीमा दर्शाता है। ऊँचा सकल लाभ अनुपात प्रबन्धकों के लिए अत्यन्त संतोष का विषय हैं। यह बेचे गये माल की नीची लागत को दर्शाता है। सकल लाभ की दर जितनी ऊँची होगी, बेचे गये माल का लागत मूल्य उतना ही कम होगा।

उदाहरण 5

एक व्यावसायिक इकाई के नीचे दिये गये विवरणों में सकल लाभ अनुपात का निर्धारण कीजिए :

विवरण	*2013 (₹)*	*2014 (₹)*
विक्रय	1,20,000	1,60,000
सकल लाभ	40,000	60,000

हल

2013 सकल लाभ अनुपात $= \frac{₹\ 40,000}{₹\ 1,20,000} \times 100 = 33.3\%$

2014 सकल लाभ अनुपात $= \frac{₹\ 60,000}{₹\ 1,60,000} \times 100 = 37.5\%$

उदाहरण 6

नीचे दिये गये आंकड़ों से सकल लाभ अनुपात की गणना करें :

विक्रय ₹ 3,25,000, विक्रय वापसी ₹ 25,000, बिके माल की लागत ₹ 2,40,000

हल

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

सकल लाभ = शुद्ध बिक्री – बिक्रय माल की लागत

= ₹ 3,00,000 – ₹ 2,40,000 = ₹ 60,000

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 60,000}{₹\ 3,00,000} \times 100 = 20\%$$

नोट : शुद्ध बिक्री = बिक्री – विक्रय वापसी

= ₹ 3,25,000 – ₹ 25,000 = ₹ 3,00,000

टिप्पणी

(ii) शुद्ध लाभ अनुपात

शुद्ध लाभ एवं बिक्री के बीच अनुपात को शुद्ध लाभ अनुपात कहते हैं। यह बिक्री पर बिक्री लाभ की सीमा को दर्शाता है। यह प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है। इस अनुपात की गणना करने का मुख्य उद्देश्य कुल लाभप्रदत्ता का निर्धारण करना है। इस अनुपात की गणना इस प्रकार से की जाती है :

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

महत्व

शुद्ध लाभ अनुपात व्यवसाय की संचालन क्षमता को व्यक्त करता है। यह इस बात को दर्शाता है कि प्रबंधक किस सीमा तक संचालन व्ययों को कम करने में सफल रहे। जितना ऊँचा शुद्ध लाभ अनुपात होगा उतना ही यह व्यवसाय के लिए अच्छा होगा।

उदाहरण 7

निम्नलिखित से शुद्ध लाभ अनुपात की गणना कीजिए :

शुद्ध लाभ	₹ 45,000
बिक्री	₹ 6,40,000
विक्रय वापसी	₹ 40,000

हल

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{शुद्ध बिक्री} = \text{विक्रय} - \text{विक्रय वापसी}$$

$$= ₹\ 6,40,000 - ₹\ 40,000 = ₹\ 6,00,000$$

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 45,000}{₹\ 6,00,000} \times 100 = 7.5\%$$

उदाहरण 8

नीचे दिये गये संमकों से सकल लाभ अनुपात एवं शुद्ध लाभ अनुपात की गणना कीजिए

विक्रय	₹ 1,50,000
बिके माल की लागत	₹ 1,20,000
परिचालन व्यय	₹ 12,000

टिप्पणी

हल

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{सकल लाभ} = \text{विक्रय} - \text{परिचालन से आगम लागत}$$

$$= ₹\ 1,50,000 - ₹\ 1,20,000$$

$$= ₹\ 30,000$$

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 30,000}{₹\ 1,50,000} \times 100 = 20\%$$

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{शुद्ध लाभ} = \text{सकल लाभ} - \text{परिचालन व्यय}$$

$$= ₹\ 30,000 - ₹\ 12,000$$

$$= ₹\ 18,000$$

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 18,000}{₹\ 1,50,000} \times 100 = 12\%$$

(iii) परिचालन लाभ अनुपात (Operating Profit Ratio)

परिचालन लाभ परिचालन क्षमता को दर्शाता है। इससे केवल कुल क्षमता का पता लगता है। यह परिचालन लाभ एवं शुद्ध विक्रय के बीच संबंध को स्थापित करता है। यह अनुपात प्रतिशत में दिखाया जाता है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है :

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{परिचालन लाभ} = \text{सकल लाभ} - (\text{प्रशासनिक व्यय} + \text{बिक्री के खर्चे})$$

महत्व

यह व्यवसाय की क्षमता की जाँच में सहायक होता है। इससे व्यवसाय की लाभप्रदत्ता एवं सुदृढ़ता को मापा जाता है। जितना ऊँचा अनुपात होगा व्यवसाय की उतनी ही श्रेष्ठ लाभप्रदत्ता होगी। यह अनुपात रोकड़ पर नियन्त्रण में भी सहायक होता हैं

टिप्पणी

उदाहरण 9

एक व्यावसायिक इकाई के नीचे दिये विवरण से परिचालन लाभ अनुपात का निर्धारण कीजिए :

विवरण	*2013* ₹	*2014* ₹
बिक्री	60,000	80,000
ऋण पत्रों पर ब्याज	1,000	2,000
शुद्ध लाभ	3,800	6,000

हल

2013

ब्याज से पूर्व शुद्ध लाभ = शुद्ध लाभ + ब्याज

= ₹ 3,800 + ₹ 1,000

= ₹ 4,800

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 4,800}{₹\ 60,000} \times 100 = 8\%$$

2014

ब्याज से पूर्व शुद्ध लाभ = ₹ 6,000 + ₹ 2,000

= ₹ 8000

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 8,000}{₹\ 80,000} \times 100 = 10\%$$

कुछ फर्म कर से पूर्व लाभ को लेती हैं लेकिन सामान्यतः कम्पनियाँ कर के बाद लाभ को लेती हैं।

उदाहरण 10

निम्नलिखित आंकड़ों से परिचालन लाभ अनुपात की गणना कीजिए :

	₹
विक्रय	3,00,000
सकल लाभ	1,20,000
प्रशासनिक व्यय	35,000
विक्रय एवं वितरण व्यय	25,000
निवेश पर ब्याज	15,000
आग से हानि	9,000

हल

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{₹\ 60,000}{₹\ 3,00,000} \times 100 = 20\%$$

टिप्पणी : परिचालन लाभ = सकल लाभ – (प्रशासनिक व्यय + विक्रय व्यय)

= ₹ 1,20,000 – (₹ 35,000 + ₹ 25,000)

= ₹ 1,20,000 – ₹ 60,000

= ₹ 60,000

पाठगत प्रश्न 32.2

रिक्त स्थानों की उचित शब्द भर कर पूर्ति कीजिए :

i. सकल लाभ अनुपात = $\frac{\text{.....}}{\text{.....}} \times 100$

ii. ..... = $\frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$

iii. उन अनुपातों के नाम बताइए जिनका सम्बन्ध व्यावसायिक इकाई की लाभ प्रदता से है।

टिप्पणी

33.3 लेखांकन अनुपातों की सीमाएं

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण में लेखांकन अनुपात बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। लेखांकन अनुपात द्वारा किसी व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति एवं सुदृढ़ता को सरलता से जाना जा सकता है। परन्तु लाभों के होते हुए भी अनुपात विश्लेषण की कुछ सीमाएं हैं। लेखांकन अनुपातों की निम्नलिखित मुख्य सीमाएं हैं :

- **गुणात्मक पक्ष की अवहेलना :** अनुपात विश्लेषण मात्रात्मक प्रकृति का होता है। यह गुणात्मक पक्ष की पूरी तरह से अवहेलना करता है जो कि कभी कभी मात्रात्मक पक्षों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है।
- **मूल्य स्तर में परिवर्तनों की अवहेलना :** मूल्य स्तर परिवर्तन किसी समय के अंकों की तुलना को कठिन बना देते हैं। इससे पहले कि कोई तुलना की जाए मूल्य स्तर परिवर्तनों के लिए उपयुक्त समायोजन किये जाने चाहिए।
- **कोई एक अवधारणा नहीं :** किसी भी अनुपात की गणना करने के लिए फर्मे अलग अलग उद्देश्य के लिए अलग अलग अवधारणाओं को आधार बनाती हैं। कुछ फर्मे लाभ को, ब्याज तथा कर से पहले लाभ अथवा कर से पहले परन्तु ब्याज के पश्चात के लाभ अथवा ब्याज तथा कर के पश्चात के लाभ को लेती हैं। इनके परिणाम भी भिन्न निकलते हैं।
- **गलत लेखांकन आंकड़ों पर आधारित होने पर भ्रामक परिणाम :** अनुपात लेखांकन आंकड़ों पर आधारित होते हैं। वे केवल तभी लाभदायक हो सकते हैं जबकि वह विश्वस्त आंकड़ों पर आधारित हों। यदि आंकड़े विश्वस्त नहीं हैं तो अनुपात भी अविश्वस्त होंगे।
- **तुलना के लिए किसी एक मानक अनुपात का न होना :** कोई भी एक मानक अनुपात ऐसा नहीं है जिसे सर्वत्र स्वीकारा गया हो तथा जिससे कोई तुलना की जा सके। मानक एक उद्योग से दूसरे उद्योग में विभिन्न हो सकते हैं।
- **पूर्वानुमान लगाने में कठिनाई :** अनुपातों की पूर्व निष्कर्षों के आधार पर गणना की जाती है क्योंकि यह वर्तमान तथा भविष्य की स्थिति को नहीं दर्शाते। इसी कारण यह वांछित नहीं है कि उन्हें भविष्य की घटनाओं के पूर्वानुमान के लिये प्रयोग किया जाए।

आपने क्या सीखा

- शोधन क्षमता अनुपात शब्द का अर्थ है किसी व्यवसाय की दीर्घ अवधि दायित्वों को पूरा करने की क्षमता। शोधन क्षमता अनुपात हैं : (क) ऋण समता अनुपात (ख) स्वामित्व अनुपात

टिप्पणी

- ऋण समता अनुपात का उद्देश्य स्वामियों द्वारा फर्म को प्रदत्त पूँजी के संबंध में बताना है।

$$\text{ऋण समता अनुपात} = \frac{\text{बाह्य लोगों का कोष}}{\text{अंश धारकों का कोष}} \text{ अथवा } \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$$

- स्वामित्व अनुपात अंशधारकों के कोष एवं फर्म की कुल संपत्तियों के बीच संबंध का निर्धारण करता है।

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{अंश धारकों का कोष}}{\text{कुल संपत्तियां}}$$

- लाभप्रदत्ता अनुपात व्यावसायिक इकाई की कुल क्षमता का आकलन करती है।
- महत्वपूर्ण लाभप्रदत्ता अनुपात हैं :

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{शुद्ध लाभ अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

$$\text{परिचालन लाभ अनुपात} = \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}} \times 100$$

- लेखांकन अनुपातों की सीमाएं हैं :
  - मूल्य स्तर में परिवर्तनों की अवहेलना
  - गुणात्मक पक्ष की अवहेलना
  - कोई एक अवधारणा नहीं
  - गलत लेखांकन आंकड़ों पर आधारित होने पर भ्रामक परिणाम
  - पूर्वानुमान लगाने में कठिनाई

पाठान्त प्रश्न

1. शोधन क्षमता अनुपातों को संक्षेप में समझाइए।
2. लाभप्रदत्ता अनुपात क्या होते हैं? इन अनुपातों को संक्षेप में समझाइए।
3. अनुपात विश्लेषण की सीमाएं कौन सी हैं?
4. सकल लाभ एवं शुद्ध लाभ से आप क्या समझते हैं?
5. निम्नलिखित आंकड़ों से (क) सकल लाभ अनुपात (ख) शुद्ध लाभ अनुपात की गणना कीजिए।

टिप्पणी

	₹
बिक्री	25,20,000
बिके माल की लागत	19,20,000
शुद्ध लाभ	3,60,000

6. कुल संपत्तियां ₹ 12,50,000; कुल ऋण ₹ 10,00,000 और चालू देयताएं ₹ 5,00,000 हैं। ऋण समता अनुपात की गणना करे।

7. नीचे 31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिए मै. बूनू लि. का लाभ हानि खाता दिया गया है

	₹		₹
प्रारंभिक स्टॉक	1,00,000	परिचालन से आगम	5,60,000
क्रय	3,50,000	अन्तिम स्टॉक	1,00,000
मजदूरी	9,000	निवेश पर ब्याज	10,000
प्रशासनिक व्यय	20,000	निवेश की बिक्री पर लाभ	8,000
वेतन एवं वितरण व्यय	89,000		
गैर परिचालन व्यय	30,000		

ज्ञात कीजिए (क) सकल लाभ अनुपात (ख) शुद्ध लाभ अनुपात (ग) परिचालन लाभ अनुपात।

8. नीचे XYZ लि. की संपत्तियों एवं देयताओं का विवरण दिया गया है

देयता	*राशि (₹)*	*संपत्तियां*	*राशि (₹)*
समता अंश पूँजी	2,50,000	भूमि एवं भवन	4,50,000
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	2,00,000	संयन्त्र	4,00,000
संचय	2,00,000	स्टॉक	1,50,000
ऋणपत्र	3,00,000	विभिन्न देनदार	1,00,000
चालू देयताएं	2,00,000	रोकड़	45,000
		पूर्वदत्त व्यय	5,000
	11,50,000		11,50,000

गणना कीजिए (क) ऋण समता अनुपात (ख) स्वामित्व अनुपात।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

33.1 (i) $\frac{\text{बाह्य लोगों का कोष}}{\text{अंशधारियों का कोष}}$ (ii) शोधन क्षमता

(iii) स्वामित्व अनुपात (iv) 2 : 3

33.2 (i) $\frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{परिचालन से आगम (शुद्ध बिक्री)}}$

(ii) परिचालन लाभ अनुपात

(iii) सकल लाभ अनुपात, शुद्ध लाभ अनुपात, परिचालन अनुपात

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

5. (क) 23.8% (ख) 14.29%

6. 2 : 1

7. (क) 35.9%, (ख) 14.29% (ग) 16.43%

8. (क) 0.46 : 1.3, (ख) 56 : 1

क्रियाकलाप

पास के बाजार में स्टॉक ब्रोकर के दफ्तर में जाएं तथा वहां से किन्हीं दो कंपनियों के वार्षिक विवरण प्राप्त करें। उन दोनों कंपनियों के स्थिति विवरणों का अध्ययन कर निम्नलिखित अनुपातों की गणना करें :

(क) ऋण समता अनुपात

(ख) सकल लाभ अनुपात

(ग) शुद्ध लाभ अनुपात

(घ) विनियोग पर प्रत्याय

दोनों कंपनियों की लाभप्रदत्ता एवं शोधन क्षमता की तुलना कर टिप्पणी कीजिए।